विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 45, जुलाई -2024

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई- पत्रिका, जुलाई – *2024*

ज्ञानोदय (अंक-45)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह,

ब॰प्रतीक्षा दीक्षित

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- शारीरिक विषय के क्रियाकलाप
- भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ
- लेख-(उत्सव, जयन्ती एवं दिवस)
  - शिवरात्रि
  - तुलसीदास जयन्ती
  - महर्षि अरविन्द जयन्ती
  - रक्षाबन्धन
  - श्री कृष्ण जन्माष्टमी
  - राष्ट्रीय खेल दिवस
  - बाल गंगाधर तिलक/ चंद्रशेखर आजाद जयन्ती
- स्वर्णप्राशन संस्कार
- विद्यारम्भ संस्कार
- अभिभावक प्रशिक्षण
- प्रतियोगिताएं
- चिकित्सा शिविर
- स्वच्छता अभियान
- गतिविधि आधारित शिक्षण
- जन्मोत्सव कार्यक्रम
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

सर्वांगीण शिक्षण में शारीरिक शिक्षण को प्रथम स्थान दिया है। शरीर तो आत्मा का घर है। प्रभु का अंश रूप तेजोमय आत्मा ही इस घर में रहती है। यह घर सुंदर, स्वच्छ,स्वस्थ और पवित्र होना चाहिए। हमारे शास्त्रों में भी कहे गए चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) प्राप्त करना हो तो उनका मुख्य आधार शरीर है। इसीलिए कहा गया है 'शरीरमाधं खलु धर्मसाधनम्'- यदि शरीर निरोगी और स्वस्थ हो तो कोई भी कार्य सिद्ध हो सकता है। शारीरिक सौष्ठव की प्रति निरोगता और शरीर की क्रियाओं के बीच सामंजस्य, यह शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। शारीरिक शिक्षा के तीन पहलू होते हैं :-

1.) शरीर की क्रियाओं पर नियंत्रण और नियमन ।

2.) शरीर उनके सभी अंगों और उनके संचालन का एक संपूर्ण पद्धति पूर्ण और समन्वित विकास।

3.) शरीर में कमी या विकृति हो तो उसकी चिकित्सा ।

शारीरिक शिक्षा में शारीरिक गतिविधि के अंतर्गत मन, शरीर और आत्मा तीनों के लिए शिक्षा शामिल है जिसमें भावात्मक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास सम्मिलित है।

हमारा सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा भी शारीरिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों को भैया/बहिनों द्वारा क्रियान्वित कराता है। जो भैया/बहिनों के समग्र विकास के साथ-साथ परिवार व समाज को भी सुदृढ़ होने में सहायक होगी।

प्रतीक्षा दीक्षित (अंक संपादक)

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

प्रधानाचार्य जी की कलम से

शिशु शिक्षा का स्वरूप-

विद्या भारती का मूल उद्देश्य भारतीय जीवन दर्शन आधारित हिंदुत्वनिष्ठ शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है। समग्र देश में विद्यालयों के माध्यम से वर्तमान शिक्षा को भारतीय स्वरूप देने का यह पुनीत कार्य विद्या भारती द्वारा हो रहा है।

विद्या भारती की अखिल भारतीय शिशु वाटिका परिषद् ने अपने सतत् चिंतन एवं प्रयोगों के आधार पर देशभर में शिशु वाटिकाओं के स्वरूप को तीन विभाग में विभाजित किया है।

1.- नमूना रूप शिशु वाटिका - (0 से 5 वर्ष के शिशु विकास की पूर्ण व्यवस्था)

2.- प्रभावी शिशु वाटिका - (विद्या भारती के पाठ्यक्रमानुसार 3 से 5 वर्ष के शिशुओं की अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था)

3.- प्रयत्नशील शिशु वाटिका - (3 से 5 वर्ष के शिशुओं के लेखन, पठन व परीक्षा आधारित औपचारिक शिक्षा व्यवस्था)

शिशु वाटिका परिषद का ध्यान उपरोक्त नमूना रूप शिशु वाटिकाओं पर केंद्रित है जहां 0 से 5 वर्ष के शिशु के परिवार पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन निम्नानुसार होगा।

1.- नव दंपति शिक्षण (गर्भाधान पूर्व 3 मास)

2.- गर्भवती शिक्षण (गर्भावस्था के नव मास)

3.- जन्म से 1 वर्ष के शिशुओं की माता का शिक्षण ।

4.- एक से तीन वर्ष के शिशुओं की माता का शिक्षण ।

5.- तीन से पांच वर्ष के शिशुओं की माता का शिक्षण ।

हमारा बालक हमारे अनुरूप बने इस दृष्टि से उपरोक्त पाठ्यक्रमानुसार हमारे लिए करणीय/ विचारणीय कार्यों की मार्गदर्शिका के रूप में शिशु वाटिका परिषद की ओर से पांच पुस्तकों का एक बहु उपयोगी साहित्य विद्यालय में उपलब्ध है। जिसे हम विद्यालय की शिशु वाटिका की बहनों से संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

हमारा परिवार एक सबल व सभ्य समाज का निर्माण कर सके, इस दिशा में हम सब का यह प्रयास यजुर्वेद की इस सूक्ति "वयं राष्ट्रे जागृयाम्" को सार्थक करेगा।

(हम पुरोहित (इस पुर का हित करने वाले) राष्ट्र को जीवन्त और जागृत बनाए रखेंगे)

(प्रधानाचार्य)

प्रकाश वीर

शारीरिक विषय के क्रियाकलाप

कक्षा - अरुण (NURSERY)

गतिविधि-1

आवश्यक सामग्री - वंदना कक्ष।

क्रियाकलाप – भैया/ बहिनों को पंक्तिबद्ध तरीके से चलना सिखाना ।

मोटर विकास कौशल- बच्चों की मानसिक व शारीरिक शक्ति का विकास करना हाथ व पैरों को मजबूत बनाना ।

कोश - आनंदमय ,शारीरिक, मानसिक , बौद्धिक विकास एकाग्रता ध्यान केंद्रित करना ।

गतिविधि-2

आवश्यक सामग्री : गुब्बारे, ऊन।

क्रियाकलाप : भैया /बहिनों को गुब्बारा छू खेल खिलाना।

मोटर विकास कौशल : बच्चों की हड्डियों मांसपेशियों की शारीरिक वृद्धि बाहों, पैरों व धड़ की मांसपेशियों को उपयोग करते हुए मजबूत करना।

कोश : आनंदमय ,शारीरिक, मानसिक,बौद्धिक विकास एकाग्रता (ध्यान केंद्रित) करना।

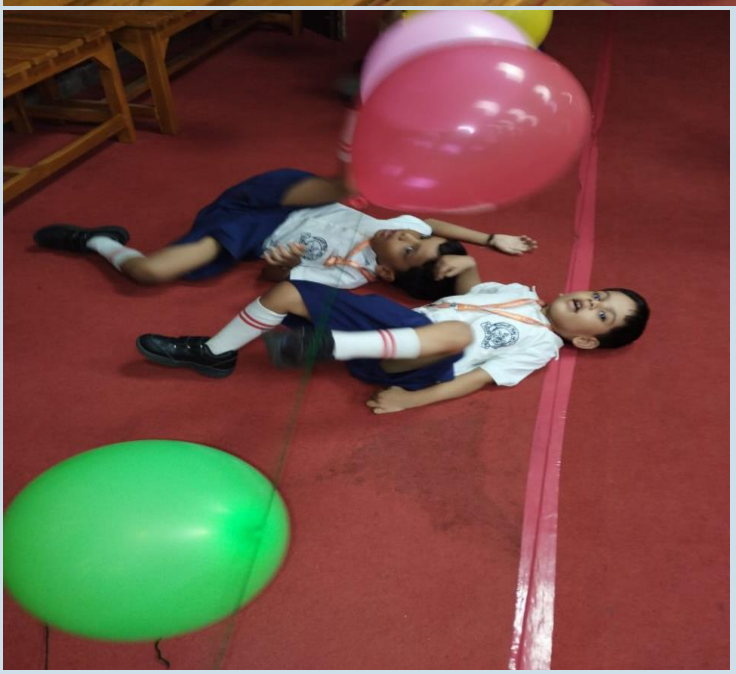

कक्षा – उदय (L.K.G.)

गतिविधि-1

विषय – सहभागी गतिविधि।

आवश्यक सामग्री – गुब्बारा।

खेलने का तरीका – सहभागी गतिविधि का।

उद्देश्य – प्रत्येक टोली में दो सदस्य होते हैं।

दोनों सदस्य गुब्बारे को अपने माथे से लगाकर तथा एक दूसरे का हाथ पकड़कर प्रारंभिक बिंदु से समापन बिंदु तक ले जाते हैं।

कौशल विकास – इससे सहयोग तथा समन्वय की भावना विकसित होती है, एकाग्रता बढ़ती है। इस गतिविधि से मनोमय तथा आनंदमय कोश का विकास होता है।

गतिविधि-2

विषय- रस्साकशी (Tug of war)

आवश्यक सामग्री- रस्सा (1इंच व्यास) ।

खेलने का तरीका- रस्साकशी खेल का उद्देश्य प्रत्येक टीम के लिए विपक्षी टीम के सदस्यों के साथ रस्सी को अपनी ओर खींचना है। गंभीर रस्साकशी प्रतियोगिता में आमतौर पर आठ खिलाड़ियों की दो टीमें एक दूसरे के विरुद्ध होती हैं। जीतने वाली टीम वह होती है जो दूसरी टीम को एक पूर्व निर्धारित बिंदु से आगे खींचती है। अक्सर यह बिंदु जमीन पर चिन्हित किया जाता है। झंडे रस्सी के साथ केंद्र बिंदु से समान दूरी पर रखे जाते हैं।

कौशल विकास- रस्साकशी के खेल से मांसपेशियों का विकास होता है। टीम के सदस्यों में आपसी सहयोग व समन्वय के द्वारा टीमवर्क को बढ़ावा मिलता है।

कक्षा – प्रभात (U.K.G.)

गतिविधि-1

विषय- कुर्सी दौड़ ।

आवश्यक सामग्री- कुर्सियां, वाद्य - यंत्र, सीटी ।

खेलने का तरीका- इस खेल में कितने भी प्रतिभागी खेल सकते हैं ,जितने प्रतिभागी होते हैं ,उससे एक कम कुर्सी होनी चाहिए ।इसके बाद एक संगीत बजता है और सारे प्रतिभागी कुर्सी के पीछे दौड़ते हैं। संगीत के बंद होने पर सभी स्थान पर बैठ जाते हैं जो नहीं बैठ पाता वह खेल से बाहर हो जाता है । इस प्रकार एक-एक कुर्सी कम होती जाती है और अंत में जो प्रतिभागी रहता है वह जीत जाता है।

कौशल विकास- खेल खेलने से शिशुओं में धैर्य, अनुशासन ,सहनशीलता, सामाजिक व मानसिक कौशलों के विकास में सहायता मिलती है। जिससे शारीरिक व क्रियात्मक विकास को बढ़ावा मिलता।

गतिविधि-2

विषय- नींबू दौड़ ।

आवश्यक सामग्री : नींबू, चम्मच ।

खेलने का तरीका: खेल की शुरुआत सभी प्रतिभागियों द्वारा खुद को व्यवस्थित करने से होती है। उन सभी को लगभग एक ही तरह का एक चम्मच और एक नींबू मिलता है। वे चम्मच को अपने मुंह में रखते हैं और उसके ऊपर नींबू रख देते हैं। वे फिर शुरुआती लाइन पर खड़े होते हैं। फिर खेल शुरू होता है। खिलाड़ी दौड़ना शुरू करते हैं, जिस दौरान वे अपने मुंह में चम्मच को संतुलित करते हैं। यदि नींबू गिर जाता है, तो वे उसे फिर से रख देते हैं और खेल शुरू कर देते हैं। फिनिश लाइन पर सबसे पहले पहुंचने वाले खिलाड़ी को विजेता घोषित किया जाता है।

कौशल का विकास : खेल खेलने के लिए खिलाड़ी की गति, चपलता, निपुणता, संतुलन क्षमता प्रमुख है। इस खेल के माध्यम से बच्चो के आनंदमय कोश का विकास होता है।

कक्षा – प्रथम (1ST)

गतिविधि-1

विषय : गुब्बारा गतिविधि

उद्देश्य: 1. **भैया / बहिनों को गुब्बारे के माध्यम से रंगो एवं उसके आकार का ज्ञान करना।**

2. **गुब्बारे को फुलाने से भैया / बहिनों की श्वसन शक्ति को बढ़ाना।**

3. **भैया / बहिनों में संतुलन क्षमता को विकसित करना।**

गतिविधि-2

विषय : रिंग गतिविधि

उद्देश्य: 1. रिंग की सहायता से भैया / बहिनों को गोलाकार आकृति का ज्ञान करना।

2. रिंग्स में कूदने की गतिविधि द्वारा भैया / बहिनों को शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाना।

कक्षा – द्वितीय (2nd)

गतिविधि

समता -

उद्देश्य- समता का मतलब समानता होता है। समता से शिशुओं में समानता का भाव उत्पन्न होता है। समता करने से शिशु में अनुशासन, एकाग्रता, साहस आदि गुणों का विकास होता है।

सामग्री - मैदान (पर्याप्त स्थान)।

विधि - समता करने के लिए शिशुओं को मैदान में उन्नतानुसार पंक्तिबद्ध करके लगाना होता है। शिशुओं को पंक्तिबद्ध लगाने के पश्चात आज्ञा देनी होती है। जिसका शिशुओं को पालन करना होता है। आज्ञा स्पष्ट होनी चाहिए। जिससे शिशु आज्ञा का पालन भलीभाँति कर सके।

कक्षा – तृतीय (3rd)

गतिविधि

योग-

योग का उद्देश्य हमारे जीवन का समग्र विकास करना है या इसे ऐसे कह सकते हैं कि जीवन का सर्वांगीण विकास करना। विकास से तात्पर्य यहां शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास से ही है योग जीवन जीने की कला है।

सामग्री - मैदान ,चटाई आदि।

विधि - योग की स्थिति को झटके के साथ करना चाहिए। योग करने का सबसे अच्छा समय सुबह 4:00 से 7:00 का होता है। सुबह को योग न कर पाने की स्थिति में सूर्यास्त के पश्चात् योग कर सकते हैं। अगर इसके अलावा योग करना है तो खाना खाने के चार घंटे बाद ही करें। योग करने के लिए हमेशा ऐसे कपड़े पहने जिसमें आप कंफर्टेबल हो, और थोड़े ढीले होने चाहिए।

कक्षा – चतुर्थ (4th)

गतिविधि

टीम का मुख्य उद्देश्य विरोधी टीम के सभी खिलाड़ियों को मैदान से बाहर भेजना और उन्हें टैप आउट करके खेल जीतना है। धावक एक पूर्वनिर्धारित क्षेत्र में दौड़ते हैं और जो टीम मैदान में सभी विरोधियों को टैप या टैग करने में सबसे कम समय लेती है, वह खेल जीत जाती है।

प्रत्येक छोर पर एक पोस्ट है, और धावक दो खिलाड़ियों के बीच दौड़ सकता है जो विपरीत दिशाओं में घुटनों के बल बैठे हैं, लेकिन पीछा करने वाले को दौड़ते समय पीछे मुड़कर खिलाड़ियों के बीच से जाने की अनुमति नहीं है। पीछा करने वाला पोल तक जा सकता है, उसे छू सकता है और वापस लौट सकता है या दूसरी तरफ जा सकता है।

सामग्री – चूना , मैदान, रेफरी, स्टॉपवॉच, कुर्सी मेंज, श्यामपट्ट, चॉक, सीटी आदि।

विधि - विपक्षी दल का खिलाड़ी पंक्ति में बैठे हुए खिलाड़ियों का चक्कर लगाता है जब पीछा करने वाला खिलाड़ी उस भगाने वाले खिलाड़ी के निकट आ जाता है। तब वह अपने ही दल के खिलाड़ी के पीछे जाकर खो शब्द का उच्चारण करता है। तो वह उठकर भागने लगता है। और विपक्षी टीम के खिलाड़ी को छूकर आउट करके अंक अर्जित करता है।

कक्षा – पंचम (5th)

गतिविधि

उद्देश्य - कबड्डी को खेलने से शिशुओं का शरीर स्वस्थ व सुगठित , दिमाग तेज व मन प्रसन्न रहता है तथा देश के लिए खेलने की भावना जागृत होती है। कबड्डी खेलने से शिशुओं में मेहनत , लगन व एकाग्रता आदि गुणों का विकास होता है ।

सामग्री - मैदान, चूना, रेफरी, स्टॉपवॉच, कुर्सी मेंज,श्यामपट्ट, , चॉक, सीटी आदि ।

विधि - खिलाड़ियों के पाले में आने के बाद टॉस जीतने वाली टीम सबसे पहले कोर्ट की साइड या रेड करना चुनती है फिर रेडर कबड्डी - कबड्डी बोलते हुए जाता है और विपक्षी खिलाड़ियों को छूकर अंक अर्जित करने का प्रयास करता है। रेडर अपनी चपलता का उपयोग करके अधिक से अधिक अंक अर्जित करने की कोशिश करता है। तथा विपक्षी टीम रेडर को पकड़कर अंक अर्जित करने का प्रयास करती है।

भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ

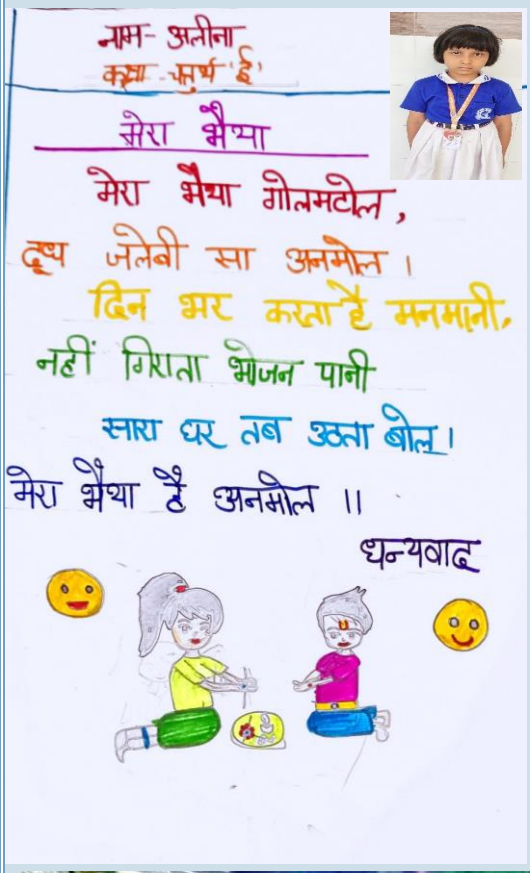

नाम- अतीना
कक्षा -चतुर्थ 'ई'

मेरा भैया

मेरा भैया गोलमटोल,
दूध जलेबी सा अनमोल।
दिन भर करता है मनमानी,
नहीं गिराता भोजन पानी
सारा घर तब उठता बोल।
मेरा भैया है अनमोल ॥
धन्यवाद

नानी की कहानी

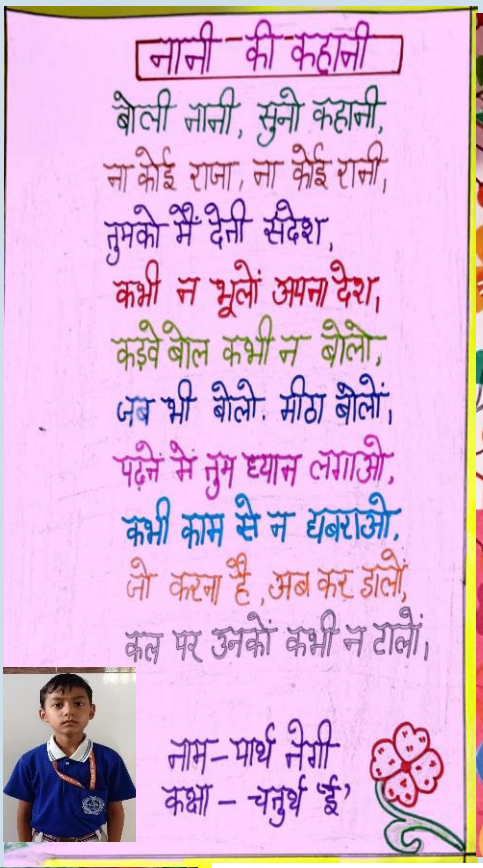

बोली नानी, सुनो कहानी,
ना कोई राजा, ना कोई रानी,
तुमको मैं देती संदेश,
कभी न भूलों अपना देश,
कड़वे बोल कभी न बोलो,
जब भी बोलो, मीठा बोलो,
पढ़ने में तुम ध्यान लगाओ,
कभी काम से न घबराओ,
जो करना है, अब कर डालो,
कल पर उनको कभी न टालो।

नाम- पार्थ नेगी
कक्षा - चतुर्थ 'ई'

Topic .... Date : ....

कविता

पेड़ की बात बहुत निराली,
होती जिसमे फूल पत्तियाँ औरडाली
देती है हवा वो सुन्दर,
करे प्रकृति की रखवाली।
धरती पर तुम पेड़ लगाओ,
धरती को हरा -भरा बनाओ।
पेड़ से आए वर्षा रानी,
नदियों मे जिससे हो पानी ॥

JIVISHA JAISWAL
4th A Roll no. 25

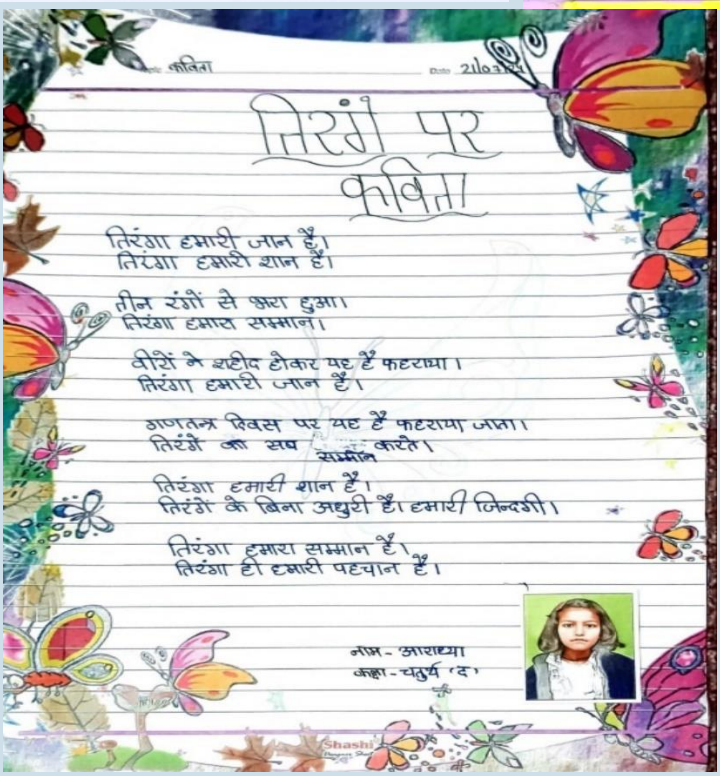

Topic कविता Date 21/07/...

तिरंगे पर कविता

तिरंगा हमारी जान है।
तिरंगा हमारी शान है।

तीन रंगों से भरा हुआ।
तिरंगा हमारा सम्मान।

वीरों ने शहीद होकर यह है फहराया।
तिरंगा हमारी जान है।

गणतन्त्र दिवस पर यह है फहराया जाता।
तिरंगे का सब सम्मान करते।

तिरंगा हमारी शान है।
तिरंगे के बिना अधुरी है। हमारी जिन्दगी।

तिरंगा हमारा सम्मान है।
तिरंगा ही हमारी पहचान है।

नाम- आराध्या
कक्षा- चतुर्थ 'द'

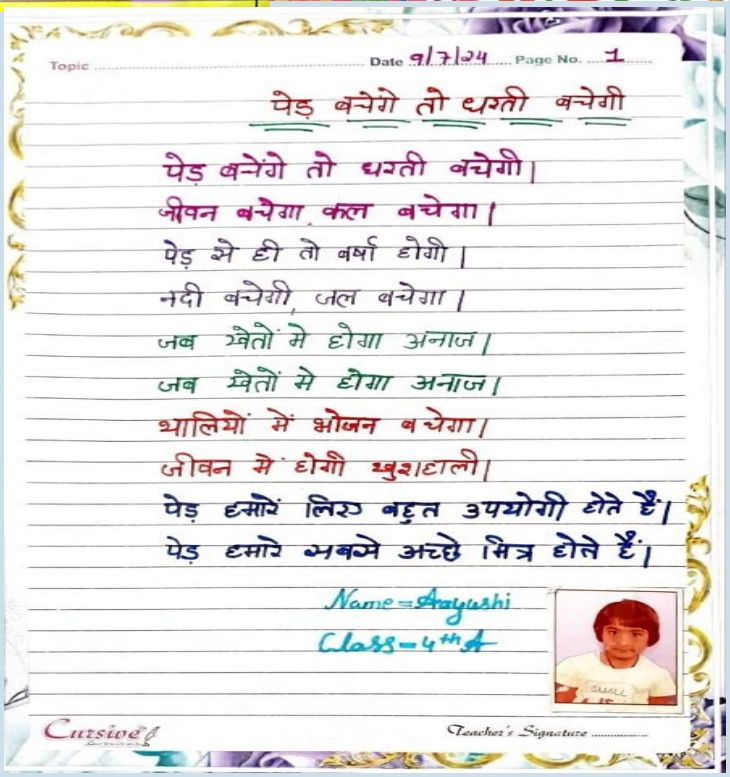

Topic .... Date 9/7/24 Page No. 1

पेड़ बचेंगे तो धरती बचेगी

पेड़ बचेंगे तो धरती बचेगी।
जीवन बचेगा, कल बचेगा।
पेड़ से ही तो वर्षा होगी।
नदी बचेगी, जल बचेगा।
जब खेतो मे होगा अनाज।
जब खेतों मे होगा अनाज।
थालियों में भोजन बचेगा।
जीवन में होगी खुशहाली।
पेड़ हमारे लिए बहुत उपयोगी होते हैं।
पेड़ हमारे सबसे अच्छे मित्र होते हैं।

Name = Aayushi
Class - 4th A

Cursive .... Teacher's Signature ....

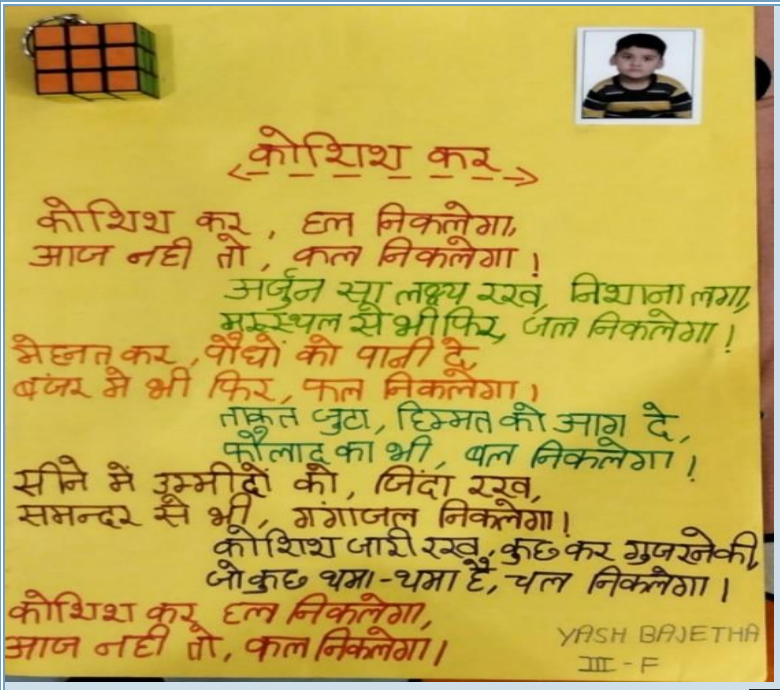

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा!
अर्जुन सा लक्ष्य रख, निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा!
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
तकदीर जुटा, हिम्मत की आग दे,
फौलाद का भी, पल निकलेगा!
सीने में उम्मीदों को, जिंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा!
कोशिश जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

YASH BAJETHA
III - F

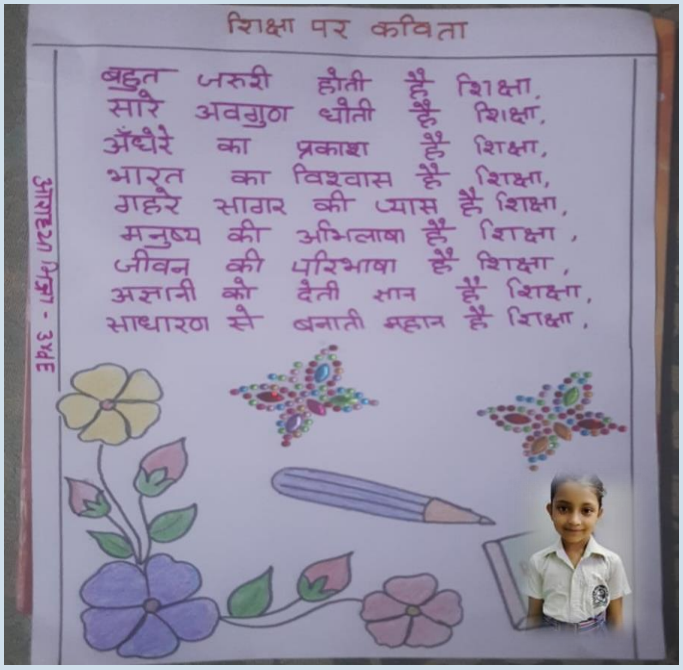

शिक्षा पर कविता

बहुत जरुरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण धोती है शिक्षा,
अँधेरे का प्रकाश है शिक्षा,
भारत का विश्वास है शिक्षा,
गहरे सागर की प्यास है शिक्षा,
मनुष्य की अभिलाषा है शिक्षा,
जीवन की परिभाषा है शिक्षा,
अज्ञानी को देती मान है शिक्षा,
साधारण से बनाती महान है शिक्षा,

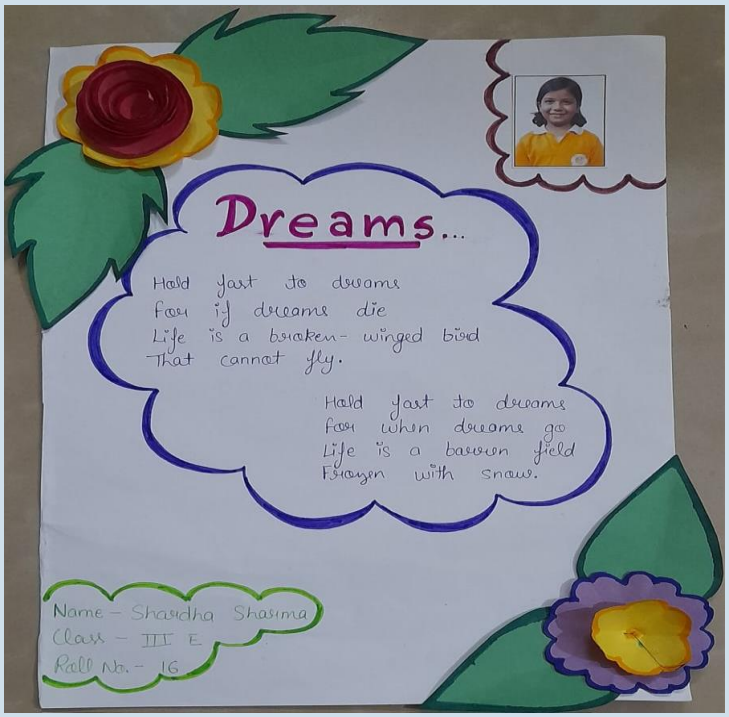

Dreams...

Hold fast to dreams
For if dreams die
Life is a broken-winged bird
That cannot fly.

Hold fast to dreams
For when dreams go
Life is a barren field
Frozen with snow.

Name - Shardha Shasima
Class - III E
Roll No. - 16

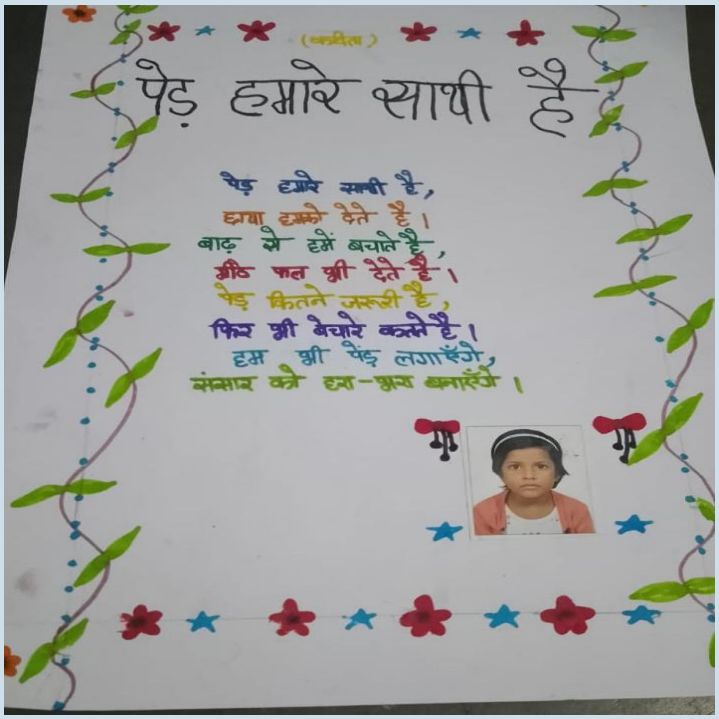

पेड़ हमारे साथी है

पेड़ हमारे साथी है,
छाया हमको देते है।
बाढ़ से हमें बचाते है,
मीठे फल भी देते है।
पेड़ कितने जरूरी है,
फिर भी बेचारे कटते है।
हम भी पेड़ लगाएँगे,
संसार को हरा-भरा बनाएँगे।

भैया/ बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ, जिसमें उन्होंने अपने भावों व कल्पनाओं द्वारा सुन्दर कविताओं की रचना की।

शिवरात्रि

शिवरात्रि हिंदुओं का एक धार्मिक त्योहार है, जिसे हिंदू धर्म के प्रमुख देवता महादेव अर्थात शिव जी के विवाह के रूप में मनाया जाता है। शिवरात्रि का पर्व फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। इस दिन शिवभक्त एवं शिव में श्रद्धा रखने वाले लोग व्रत उपवास रखते हैं और विशेष रूप से भगवान शिव की आराधना करते हैं । शिवरात्रि को लेकर भगवान शिव से जुड़ी कुछ मान्यताएं प्रचलित है।

ऐसा माना जाता है कि इस विशेष दिन ही ब्रह्मा के रूद्र रूप में मध्य रात्रि को भगवान शंकर का अवतरण हुआ था। वही यह भी मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने तांडव कर अपना तीसरा नेत्र खोला था और ब्रह्मांड को इस नेत्र की ज्वाला से समाप्त किया था। इसके अलावा कई स्थानों पर इस दिन को भगवान शिव के विवाह से भी जोड़ा जाता है और यह माना जाता है कि इसी पावन दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। वैसे तो प्रत्येक माह में एक शिवरात्रि होती है परंतु फाल्गुन माह की कृष्ण चतुर्दशी को आने वाली इस शिवरात्रि का अत्यंत महत्व है इसलिए इसे शिवरात्रि कहा जाता है । वास्तव में शिवरात्रि भगवान भोलेनाथ की आराधना का ही पर्व है, जब धर्म प्रेमी लोग महादेव का विधि विधान के साथ पूजन अर्चन करते हैं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इस दिन शिव मंदिरों में बड़ी संख्या में भक्तों की भीड़ उमड़ती है, जो शिव के दर्शन पूजन कर खुद को सौभाग्यशाली मानती हैं। महाशिवरात्रि के दिन शिव जी का विभिन्न पवित्र वस्तुओं से पूजन एवं अभिषेक किया जाता है और बिल्वपत्र ,धतूरा,अबीर, गुलाल, बेर उम्बी आदि अर्पित किया जाता है। भगवान शिव को भांग बेहद प्रिय है अतः कई लोग उन्हें भांग भी चढ़ाते हैं। दिनभर उपवास रखकर पूजन करने के बाद शाम के समय फलाहार किया जाता है।

शिवरात्रि आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले साधकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है,जो पारिवारिक परिस्थितियों में हैं और संसार की महत्वाकांक्षाओं में मग्न हैं। पारिवारिक परिस्थितियों मे मग्न लोग शिवरात्रि शिव के विवाह के उत्सव की तरह मनाते हैं।सांसारिक महत्वाकांक्षाओं में मग्न लोग शिवरात्रि को शिव के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय पाने के दिवस के रूप में मनाते हैं। परंतु साधकों के लिए,यह वह दिन है, जिस दिन वे कैलाश पर्वत के साथ एकात्म हो गए हैं, वे पर्वत की भांति निश्चल हो गए थे। योगी परंपरा में शिव को किसी देवता की तरह नहीं पूजा जाता, उन्हें आदि गुरु माना जाता है। पहले गुरु जिनसे से ज्ञान उपजा। ध्यान की अनेक सहस्त्राब्दियों के पश्चात एक दिन वे पूर्ण रूप से स्थिर हो गए। वही दिन शिवरात्रि का था।

आचार्या – अभिलाषा

स०शि०म०,नोएडा

तुलसीदास जयन्ती

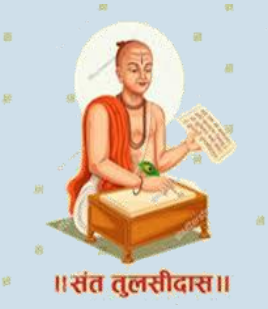
॥संत तुलसीदास॥

गोस्वामी तुलसीदास (11अगस्त 1511 - 1623) हिन्दी साहित्य के महान भक्त कवि थे। रामचरितमानस इनका गौरव ग्रन्थ है। इन्हें आदिकाव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी माना जाता है। भगवान की प्रेरणा से शूकरक्षेत्र सोरों में रहकर पाठशाला चलाने वाले गुरु नृसिंह चौधरी ने इस रामबोला के नाम से बहुचर्चित हो चुके इस बालक को ढूँढ निकाला और विधिवत उसका नाम *तुलसीदास* रखा। गुरु नृसिंह चौधरी ने ही इन्हें रामायण, पिंगलशास्त्र व गुरु हरिहरानंद ने इन्हें संगीत की शिक्षा दी। तदोपरान्त बदरिया निवासी दीनबंधु पाठक की विदुषी पुत्री रत्नावली से संवत् 1589 विक्रमी में इनका विवाह हुआ, जिसके गर्भ से एक पुत्र भी इन्हें प्राप्त हुआ, जिसका नाम तारापति/तारक था, जोकि कुछ समय बाद ही काल कवलित हो गया। रत्नावली के पीहर (बदरिया) चले जाने पर ये रात में ही गंगा को तैरकर पार करके बदरिया जा पहुँचे। तब रत्नावली ने लज्जित होकर इन्हें धिक्कारा। उन्हीं वचनों को सुनकर इनके मन में वैराग्य के अंकुर फूट गए और 36 वर्ष की अवस्था में शूकरक्षेत्र सोरों को सदा के लिए त्यागकर चले गए।

कुछ काल राजापुर रहने के बाद वे पुन: काशी चले गये और वहाँ की जनता को राम-कथा सुनाने लगे। कथा के दौरान उन्हें एक दिन मनुष्य के वेष में एक प्रेत मिला, जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बतलाया। हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास ने उनसे श्री रघुनाथजी का दर्शन कराने की प्रार्थना की। हनुमान्‌जी ने कहा- "तुम्हें चित्रकूट में रघुनाथजी दर्शन होंगें।" इस पर तुलसीदास जी चित्रकूट की ओर चल पड़े। चित्रकूट पहुँच कर उन्होंने रामघाट पर अपना आसन जमाया। एक दिन वे प्रदक्षिणा करने निकले ही थे कि यकायक मार्ग में उन्हें श्रीराम के दर्शन हुए। उन्होंने देखा कि दो बड़े ही सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार होकर धनुष-बाण लिये जा रहे हैं। तुलसीदास उन्हें देखकर आकर्षित तो हुए, परन्तु उन्हें पहचान न सके। तभी पीछे से हनुमान जी ने आकर जब उन्हें सारा भेद बताया तो वे पश्चाताप करने लगे। इस पर हनुमान जी ने उन्हें सात्वना दी और कहा प्रातःकाल फिर दर्शन होंगे। संवत् 1607 की मौनी अमावस्या को बुधवार के दिन उनके सामने भगवान श्री राम जी पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बालक रूप में आकर तुलसीदास से कहा-"बाबा! हमें चन्दन चाहिये क्या आप हमें चन्दन दे सकते हैं?" हनुमान जी ने सोचा, कहीं वे इस बार भी धोखा न खा जायें, इसलिये उन्होंने तोते का रूप धारण करके यह दोहा कहा।

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीर।

तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुबीर॥

तुलसीदास भगवान श्री राम जी की उस अद्‌भुत छवि को निहार कर अपने शरीर की सुध-बुध ही भूल गये। अन्ततोगत्वा भगवान ने स्वयं अपने हाथ से चन्दन लेकर अपने तथा तुलसीदास जी के मस्तक पर लगाया और अन्तर्ध्यान हो गये।

आचार्य - आशुतोष दुबे
स०शि०म०,नोएडा

महर्षि अरविन्द जयन्ती

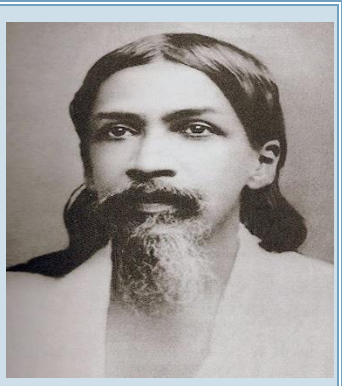

श्री अरबिंद घोष एक महान विद्वान,योगी,भविष्यद्रष्टा, दार्शनिक,समाज सुधारक,कवि और राष्ट्रवादी युग पुरुष थे। इनका जन्म 15 अगस्त, 1872 को कलकत्ता के दार्जलिंग में एक बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ। ये डॉ. कृष्णधन घोष और स्वर्णलता देवी की तीसरी संतान थे। इनके पिता अंग्रेजी सभ्यता के बड़े समर्थक थे।

पांच वर्ष की उम्र में इनका दाखिला दार्जलिंग के एक अंग्रेजी स्कूल 'लॉरेंट कॉन्वेंट' में करवाया गया एवम् आगे की पढ़ाई के लिए सात वर्ष की अल्पायु में इन्हें लंदन के 'सेंट पॉल्स स्कूल' भेज दिया गया।श्री अरबिंद घोष बाल्यकाल से ही एक मेधावी छात्र थे। लंदन में इन्होंने अंग्रेजी के साथ ग्रीक, लैटिन और फ्रांसीसी भाषाएं सीख लीं। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण इन्होंने क्लासिकल ट्रिपोज परीक्षा प्रथम प्रयास में अच्छे नंबरों से पास की, किंतु व्यक्तिगत कारणों की वजह है ये परीक्षा के अंतिम चरण घुड़सवारी में शामिल नहीं हुए जिस कारण उन्हें सिविल सेवा से निकाल दिया गया।1892 में ये लंदन से भारत आ गए और बड़ौदा के महाराज के अधीन काम करने लगे। इनका विवाह मृणालिनी के साथ 1901 में हुआ।

इन्होंने आध्यात्मिक विकास के माध्यम से पृथ्वी पर दिव्य जीवन के दर्शन को प्रतिपादित किया।1905 में बंगाल के विभाजन से आहत होकर 1906 में कोलकाता विश्विद्यालय के प्रिंसिपल पद से इस्तीफा देकर सक्रिय राजनीति में आ गए। ये सच्चे राष्ट्रप्रेमी और वामपंथ के समर्थक थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्र आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 'वंदे मातरम्' में अपने देशभक्ति पूर्ण लेखों के लिए सरकार की नजर में चढ़ गए। श्री अरबिंद घोष राष्ट्रवादी नेताओं में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की पूर्ण स्वतंत्र को आंदोलन का लक्ष्य निर्धारित किया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लिए वे एक ऐसा व्यक्तित्व थे जिसके नाम की सौगंध खाई जा सकती है। सी. आर. दास उन्हें राष्ट्रीयता के पैगंबर और देशभक्ति के कवि बताते हैं। लॉर्ड मिंटो उन्हें भारत का सबसे खतरनाक व्यक्ति बताते है जिस पर नज़र रखी जानी चाहिए। वे वामपंथ के आदर्शवादी विचारों का समर्थन करते हैं और स्वाधीनता के लिए राष्ट्र की आशाओं को जाग्रत करने एवं सभी प्रकार की उदासीनता और निष्क्रीयताओं को त्यागने के लिए प्रेरित करते हैं।

आचार्या - अनुपम चौहान

स०शि०म०,नोएडा

रक्षाबन्धन

रक्षा बंधन भारत और दुनिया भर में भारतीय समुदायों के बीच मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्योहार है। रक्षाबंधन त्योहार हिंदू महीने श्रावण की पूर्णिमा के दिन पड़ता है। यह दिन भाई- बहिनों के बीच साझा किए जाने वाले गहरे और स्थायी प्रेम का प्रतीक है। "रक्षा बंधन" शब्द का अर्थ "सुरक्षा का बंधन" है। यह त्योहार बिलकुल सरल है पर इसके मायने बेहतर गहरे हैं। इस दिन बहिनें सुरक्षा और स्नेह के रूप में अपने भाइयों की कलाई पर एक धागा बांधती हैं, जिसे राखी के नाम से जाना जाता है। बदले में, भाई अपनी बहिनों को उपहार देते हैं और उन्हें किसी भी नुकसान या विपत्ति से बचाने का वादा करते हैं।

यह त्योहार महज एक रिवाज़ से कहीं अधिक है। यह भाई-बहनों की हर सुख-दुख में एक-दूसरे की देखभाल करने की आजीवन वादे का प्रतीक है।रक्षा बंधन का इतिहास पौराणिक कथाओं में निहित है। भारतीय पौराणिक कथाओं में से एक प्रसिद्ध कहानी भगवान कृष्ण और द्रौपदी की कहानी है। महाभारत के अनुसार, जब भगवान कृष्ण घायल हो गए थे तो द्रौपदी ने उनकी कलाई पर पट्टी बांधने के लिए अपनी साड़ी का एक टुकड़ा फाड़ दिया था। उसके भाव से प्रभावित होकर, कृष्ण ने जरूरत के समय उसकी रक्षा करने की कसम खाई। इस कहानी को अक्सर भाई-बहनों के बीच के अटूट बंधन के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है और यह भारतीय संस्कृति में रक्षा बंधन के महत्व पर प्रकाश डालती है।

रक्षा बंधन का उत्सव रक्त संबंधों से भी आगे तक फैला हुआ है। दोस्त, चचेरे भाई-बहन और यहां तक कि पड़ोसी भी राखी और उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं, जो समाज में व्याप्त एकता और सद्भाव का प्रतीक है। रक्षा बंधन सिर्फ एक धार्मिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं है; यह प्रेम, सम्मान और एकजुटता के मूल्यों का प्रतिबिंब है। ऐसी दुनिया में जहां रिश्ते कभी-कभी विभिन्न कारणों से तनावपूर्ण हो सकते हैं, यह त्यौहार इन रिश्तों को संजोने के महत्व की याद दिलाता है। जैसे-जैसे रक्षा बंधन का दिन नजदीक आता है, बाजार रंग-बिरंगी राखियों, मिठाइयों और उपहारों से जीवंत हो उठते हैं। परिवार उत्सुकता से इस अवसर की तैयारी करते हैं, बहनें अपने भाइयों के लिए उत्तम राखी चुनती हैंऔर भाई अपनी बहनों के लिए सोच-समझकर उपहार चुनते हैं। बहनें राखी बांधती हुई भाई की आरती करती हैं, तिलक लगाती हैं और मीठा खिलाती हैं।

भाई अपनी बहनों को आशीर्वाद और उपहार देकर उनका धन्यवाद करते हैं। रक्षा बंधन एक त्योहार से कहीं अधिक है। यह भाई-बहनों के बीच मौजूद अनूठे और गहरे बंधन का उत्सव है। यह प्यार, देखभाल और सुरक्षा के मूल्यों का उदाहरण देता है, जो रक्त संबंधों से परे मजबूत रिश्तों को बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे समाज विकसित होता है और रिश्ते बदलते हैं, रक्षा बंधन भाई-बहन के प्यार की स्थायी प्रकृति की निरंतर याद दिलाता है।

आचार्या -प्रेरणा कपूर

स०शि०म०,नोएडा

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्ण जन्माष्टमी हिंदुओं के पवित्र त्योहारों में से एक है। जिसे भारत में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भादो मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में मध्यरात्रि को हुआ था। श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार हैं।

श्री कृष्ण देवकी और वासुदेव के आठवें पुत्र थे। देवकी मथुरा के राजा कंस की बहन थी। जो बहुत अत्याचारी था। एक समय आकाशवाणी हुई कि हे कंस देवकी का आठवां पुत्र ही तुम्हारा वध करेगा। यह सुनकर कंस ने देवकी और वासुदेव को काल कोठरी में डाल दिया और जब भी देवकी किसी बच्चे को जन्म देती तो कंस उसे पैदा होते ही मार देता था। जब देवकी और वासुदेव की आठवीं संतान का जन्म हुआ तब भगवान विष्णु ने वासुदेव को आदेश दिया कि वे कृष्ण को गोकुल यशोदा माता और नन्द बाबा के पास पहुंचा आए जिससे वह वहाँ सुरक्षित रहे।

तभी वासुदेव कृष्ण को गोकुल यशोदा माता और नन्द बाबा को दे आए और उनकी बेटी वहाँ से ले आए जब कंस कारागार में आया तो उसे वहाँ एक कन्या मिली। कंस ने उसे जमीन पर पटका तो वह कन्या देवी योगमाया के रूप में प्रकट हुई और बोली हे कंस तुझे मारने वाला इस दुनिया में जन्म ले चुका है।

भगवान श्रीकृष्ण का पालन पोषण यशोदा माता और नन्द बाबा की देखरेख में हुआ। तभी से उनके जन्म की खुशी में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी का त्योहार मनाया जाता है। इस दिन मंदिरों को सजाया जाता है। सुन्दर-सुन्दर झांकियां बनाई जाती हैं। जगह- जगह भजन कीर्तन का आयोजन किया जाता है। कुछ जगहों पर दही हांडी का आयोजन भी किया जाता है।

विशेषकर इसका महत्त्व गुजरात और महाराष्ट्र में है। बालपन में कान्हा बहुत नटखट थे। वह अपने शखाओं के साथ मिलकर लोगों के घरों से माखन चोरी करके खाते थे। उनकी इन्हीं शरारतों को याद करने के लिए माखन की मटकी को ऊँचाई पर टांग दिया जाता है। लड़के नाचते- गाते पिरामिड बनाते हुए मटकी तक पहुँचकर उसे फोड़ते है। इसे दही हांडी कहते हैं। इस दिन पूरे दिन व्रत रखा जाता है तथा सभी प्रकार के मौसमी फल, दूध, दही, माखन मिश्री, पंचामृत, धनिया मेवे की पंजीरी, पकवान, तुलसी दल आदि से भगवान को भोग लगाकर रात 12:00 बजे पूजा अर्चना करके प्रसाद ग्रहण करते हैं। ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है।

आचार्या - रचना शर्मा
स०शि०म०,नोएडा

राष्ट्रीय खेल दिवस

भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त को हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती पर मनाया जाता है। यह दिन 1928, 1932 और 1936 में भारत के लिए ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद सिंह के जन्मदिन का प्रतीक है। उन्होंने अपने करियर में 400 से अधिक गोल किये।

अंतरराष्ट्रीय हॉकी क्षेत्र पर उन्होंने अपनी मुहर लगाई। वह भारतीय और विश्व हॉकी में एक महान हस्ती हैं। उनके लिए सबसे प्रसिद्ध स्मारक मेजर ध्यानचंद पुरस्कार है जो भारत में खेलों में जीवन भर की उपलब्धि के लिए सर्वोच्च पुरस्कार है। उनके जन्मदिन पर राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह होता है। इस दिन राष्ट्रपति मेजर ध्यान चंद खेल रत्न, अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कार नामित लोगों को प्रदान करते हैं।

भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को मनाया जाता है। 29 अगस्त को मनाने का कारण यह है कि इस दिन भारत के दिग्गज हॉकी प्लेयर मेजर ध्यान चन्द का जन्म हुआ था।

मेजर ध्यान चन्द को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। उन्होंने हॉकी खेल में भारत का नाम ऊँचा किया था, इस लिए इनके जन्म दिन को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय खेल दिवस भारतीय खेल कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण दिन है।

यह भारतीय एथलीटों की उपलब्धियों का जश्न मनाने और भारत के लोगों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने का दिन है।

आचार्या - प्रीती शर्मा
स०शि०म०,नोएडा

बाल गंगाधर तिलक/ चंद्रशेखर आजाद जयन्ती

विद्यालय में दिनांक- 23/07/2024 को महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद और बाल गंगाधर तिलक का जन्मोत्सव कार्यक्रम मनाया गया । इस अवसर पर हरिओम जी (आचार्य जी) ने दोनों महान विभूतियों के महान कृतित्व के बारे में भैया/बहिनों को महत्वपूर्ण जानकारी दी।

स्वर्णप्राशन संस्कार

सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर - 12 नोएडा में प्रतिमाह पुष्य नक्षत्र में शिशु वाटिका के भैया/ बहिनों को स्वर्ण प्राशन कराया जाता है। इसी क्रम में 7 जुलाई (रविवार) को स्वर्ण प्राशन कराते समय उपस्थित अभिभावक , आचार्य दीदी व भैया/ बहिनों के छायाचित्र.....

विद्यारम्भ संस्कार

संस्कार

विद्या भारती से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु वाटिका

सरस्वती शिशु मन्दिर ,नोएडा में दिनांक - 20/7/2024 को शिशुवाटिका के भैया/ बहिनों के विद्यारंभ संस्कार व वृक्षारोपण कार्यक्रम में उपस्थित रहे प्रदेश संगठन मंत्री श्री प्रदीप कुमार जी, प्रधानाचार्य जी, अभिभावक बंधु/भगिनी व भैया /बहिन...

अभिभावक प्रशिक्षण

SORRY
PLEASE
THANK YOU
WEL COME
EXCUSE ME

विद्या भारती से सम्बद्ध

BAT
RAT
VAN

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद्, नोएडा

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

दिनांक - 26 व 29 जुलाई 2024 को विद्यालय में कक्षा - अरुण ,उदय व प्रभात के क्रमशः अलग-अलग समय पर अभिभावक प्रशिक्षण कार्यक्रम रहे। छायाचित्र.....

प्रतियोगिताएं

वेश व पहाड़ा

बस्ता

बस्ता-प्रतियोगिता

बस्ता-प्रतियोगिता

1st

apple

REDMI NOTE 9
AI QUAD CAMERA

safari

सुलेख

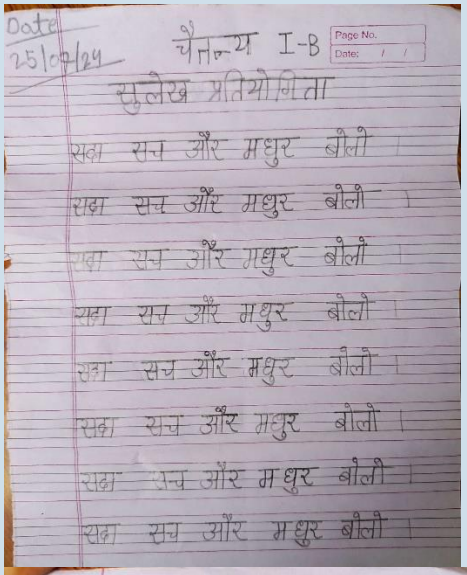

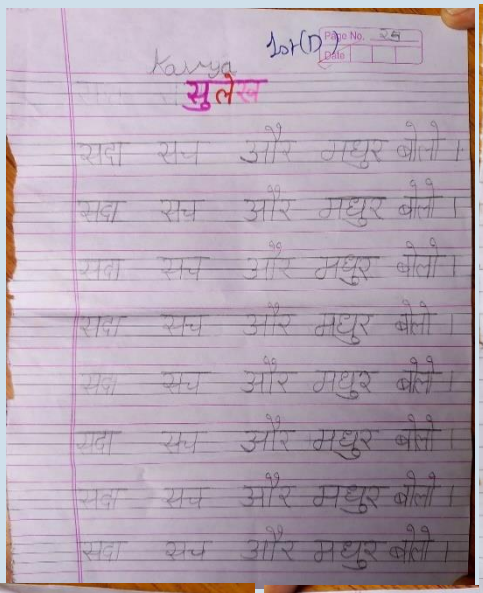

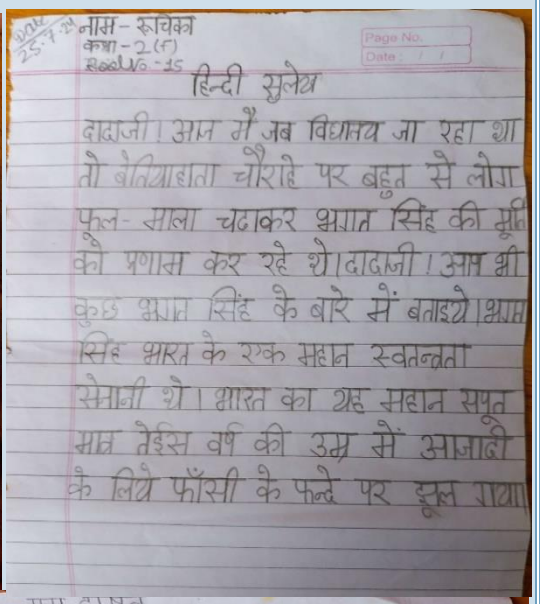

Date 25/07/24
चैतन्य I-B
Page No.
Date: / /
सुलेख प्रतियोगिता
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।

Kavya 1or(D)
Page No. 25
Date
सुलेख
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।
सदा सच और मधुर बोलो।

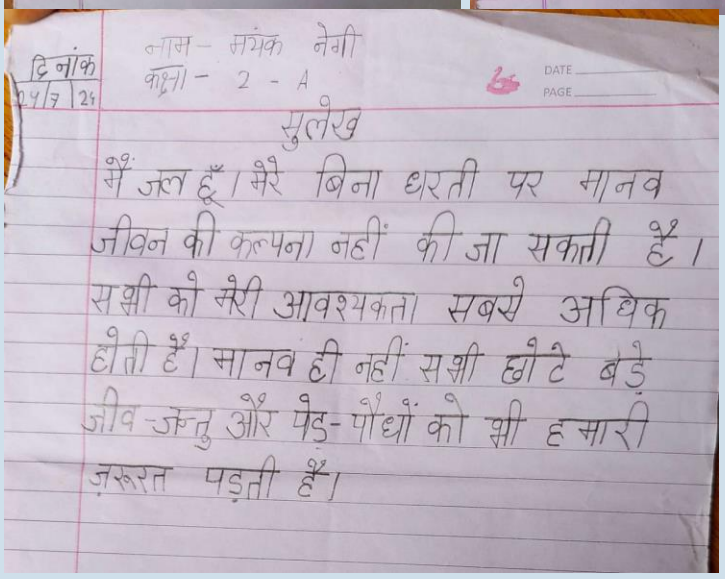

Date 25-7-24
नाम - रुचिका
कक्षा - 2 (F)
Roll No. - 15
Page No.
Date: / /
हिन्दी सुलेख
दादाजी! आज मैं जब विद्यालय जा रहा था तो बेतियाहाता चौराहे पर बहुत से लोग फूल-माला चढ़ाकर भगत सिंह की मूर्ति को प्रणाम कर रहे थे। दादाजी! आप भी कुछ भगत सिंह के बारे में बताइये। भगत सिंह भारत के एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। भारत का यह महान सपूत मात्र तेईस वर्ष की उम्र में आजादी के लिये फाँसी के फन्दे पर झूल गया।

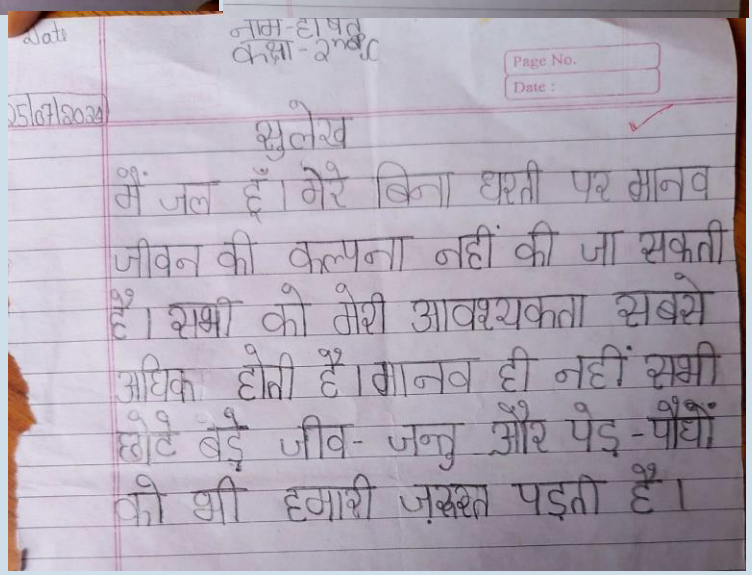

दिनांक 24/7/24
नाम - मयंक नेगी
कक्षा - 2 - A
DATE
PAGE
सुलेख
मैं जल हूँ। मेरे बिना धरती पर मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। सभी को मेरी आवश्यकता सबसे अधिक होती है। मानव ही नहीं सभी छोटे बड़े जीव-जन्तु और पेड़-पौधों को भी हमारी ज़रूरत पड़ती है।

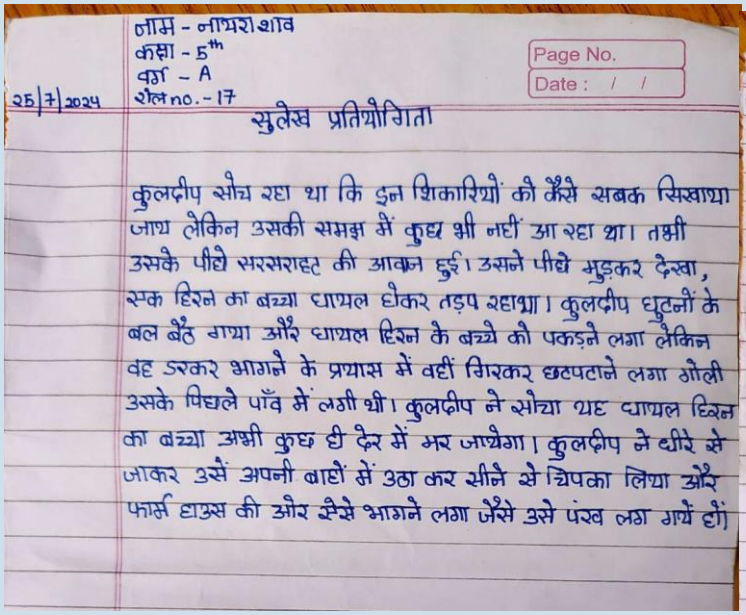

Date 25/07/2024
नाम - हर्षित
कक्षा - 2nd C
Page No.
Date:
सुलेख
मैं जल हूँ। मेरे बिना धरती पर मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। सभी को मेरी आवश्यकता सबसे अधिक होती है। मानव ही नहीं सभी छोटे बड़े जीव-जन्तु और पेड़-पौधों को भी हमारी ज़रूरत पड़ती है।

नाम - नाम्या राव
कक्षा - 5th
वर्ग - A
रोल no. - 17
25/7/2024
Page No.
Date: / /
सुलेख प्रतियोगिता
कुलदीप सोच रहा था कि इन शिकारियों को कैसे सबक सिखाया जाय लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। तभी उसके पीछे सरसराहट की आवाज हुई। उसने पीछे मुड़कर देखा, एक हिरन का बच्चा घायल होकर तड़प रहा था। कुलदीप घुटनों के बल बैठ गया और घायल हिरन के बच्चे को पकड़ने लगा लेकिन वह उठकर भागने के प्रयास में वहीं गिरकर छटपटाने लगा गोली उसके पिछले पाँव में लगी थी। कुलदीप ने सोचा यह घायल हिरन का बच्चा अभी कुछ ही देर में मर जायेगा। कुलदीप ने धीरे से जाकर उसे अपनी बाहों में उठा कर सीने से चिपका लिया और फार्म हाउस की ओर ऐसे भागने लगा जैसे उसे पंख लग गये हों।

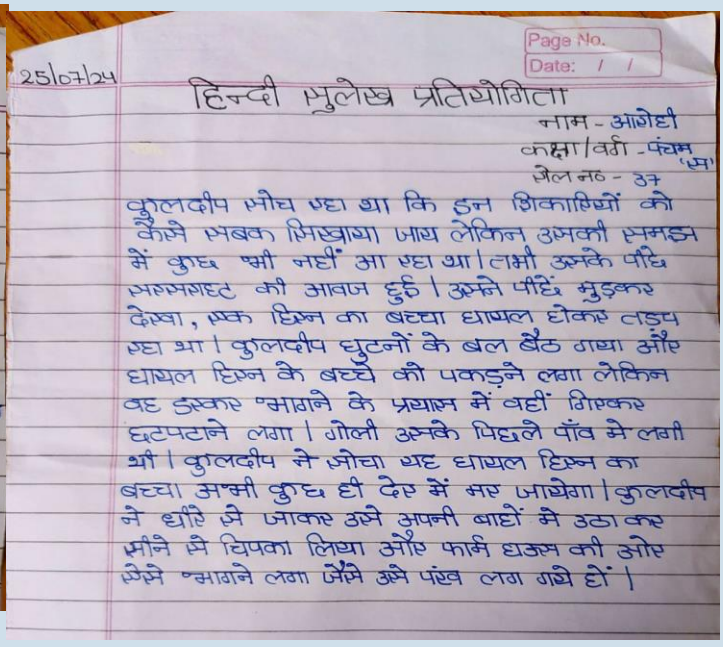

25/07/24
Page No.
Date: / /
हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता
नाम - आरोही
कक्षा/वर्ग - पंचम 'स'
रोल नं० - 37
कुलदीप सोच रहा था कि इन शिकारियों को कैसे सबक सिखाया जाय लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। तभी उसके पीछे सरसराहट की आवाज हुई। उसने पीछे मुड़कर देखा, एक हिरन का बच्चा घायल होकर तड़प रहा था। कुलदीप घुटनों के बल बैठ गया और घायल हिरन के बच्चे को पकड़ने लगा लेकिन वह उठकर भागने के प्रयास में वहीं गिरकर छटपटाने लगा। गोली उसके पिछले पाँव में लगी थी। कुलदीप ने सोचा यह घायल हिरन का बच्चा अभी कुछ ही देर में मर जायेगा। कुलदीप ने धीरे से जाकर उसे अपनी बाहों में उठाकर सीने से चिपका लिया और फार्म हाउस की ओर ऐसे भागने लगा जैसे उसे पंख लग गये हों।

25/7/24 Vaanya I-B

Writing Competition

The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.
The red apple is sweet.

Name- Riyasa Class- II 'F' Date- 25/7/24

Good student get up early in the morning. They do good deeds. They touch the feet of their parents and elders. They pray to god. They bathe daily. They go to school daily. They do their homework. They learn their lesson. They get good marks in the examination. They are kind to the poor and animal. They respect their elders.

Roll No-3 Vaishnavi II nd F

Writing

Good students get up early in the morning. They do good deeds. They touch the feet of their parents and elders. They pray to God. They bath daily. They go to school daily. They do their home work. They learn their lesson. They get good marks in the examination. They are kind to the poor and animals. They respect

Name - RIShabh Singh
Class - IInd 'C'

Writing (Good Students)

1 Good students get up early in the morning. They do good deeds. The touch the feet of their parents and elders. They pray to God. They bathe daily. They go to school daily. They do their homework. They learn their lesson. They get good marks in the exmaintion. They are good kind to the poor animals. They respect their elders They never abuse. All love them

Name-Aarvi
Class-5th F
Rollno.-20

Writing Competetion

Two words 'Jai Hind' remind us of one of most fearless and greatest man of 'India'. It was Subhash Chandra Bose who said these words and filled them with a great feeling of patriotism.

Subhash Chandra Bose was born at Cuttack on 23rd January 1897. He was brought up in his family with great love and care. Rai Bahadur Janki Nath Bose was his father. He was the landlord of his village Kodoila. Prabhavati Devi was his mother.

Subhash Chandra Bose was a handsome child. He was a man of extraordinary courage and wisdom. At the age of five he went to school. He was a bright student and got scholarship.

विद्यालय में दिनांक – 22,23,25 व 26 जुलाई 2024 को क्रमशः वेश, बस्ता, पहाड़ा और सुलेख प्रतियोगिताओं के प्रथम चरण के छायाचित्र.....

चिकित्सा शिविर

विद्यालय में दिनांक- 21 जुलाई 2024 को डायबिटिक फोरम नोएडा तथा भारत विकास परिषद नोएडा के सौजन्य से विद्यालय के भैया/बहिनों, अभिभावकों, स्टाफ व जन सामान्य हेतु चिकित्सा शिविर लगाया गया। शिविर में डॉक्टर जी.सी. वैष्णव के नेतृत्व में अनेक चिकित्सा विशेषज्ञ तथा श्री प्रताप मेहता जी, पंकज जिंदल , केशव गंगल , दिनेश महावर सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे।

स्वच्छता अभियान

दिनांक - 25/07/2024 को नोएडा प्राधिकरण से आए हुए अतिथि बंधुओं ने भैया/ बहिनों को स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जानकारी दी।

गतिविधि आधारित शिक्षण

शनिवार को होने वाले क्रिया आधारित शिक्षण के छायाचित्र.....

जन्मोत्सव कार्यक्रम

दिनांक- 30/07/2024 को विद्यालय में शिशुओं के उज्जवल भविष्य के लिए उनके जन्मदिवस पर हवन पूजन कार्यक्रम किया गया।

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1.हमारे शास्त्रों में कितने पुरुषार्थ बताए गए हैं ?

2.विद्या भारती का मूल उद्देश्य किस प्रकार की शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है ?

3.कुर्सियों की सहायता से कौन-सा खेल खेला जाता है ?

4.समता का क्या मतलब होता है ?

5.गोस्वामी तुलसीदास जी के बचपन का क्या नाम था ?

6.अरविंद घोष का जन्म कब हुआ था ?

7.रक्षाबंधन का त्यौहार कब मनाया जाता है ?

8.श्री कृष्ण के माता-पिता का क्या नाम था ?

9.राष्ट्रीय खेल दिवस किस तिथि को मनाया जाता है ?

10.हॉकी का जादूगर किस खिलाड़ी को कहा जाता है ?

11.विद्यालय में बाल गंगाधर तिलक व चंद्रशेखर आजाद जयंती कब मनाई गई ?

12. विद्यालय में प्रथम चरण की वेश प्रतियोगिता कब संपन्न हुई ?

आलोक- कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया /बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 41 में दिए गए। प्रश्नो के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 06 अगस्त 2024 तक भेजने होंगे, जिससे आपके आने वाली परीक्षा में उनके अंक दिए जा सकें।

प्रतीक्षा दीक्षित

अंक सम्पादक